सी. एन. सुब्रह्मण्यम्

एक अस्पताल, बहुत पुराना

किसी भी अस्पताल में क्या होता होगा? कुछ बीमार, कुछ डॉक्टर, कुछ ऑपरेशन करने वाले, कुछ दवाई देने वाले, कुछ नर्स... यही सब ना! यह तो हमारा ख्याल है। तुम पता करना किसी भी अस्पताल में किस-किस तरह के लोग काम करते हैं।

अस्पताल का नाम सुनते ही लगता है कि यह तो अँग्रेज़ों के ज़माने में ही बना होगा। पर उससे पहले बीमार लोग कहाँ जाते होंगे? वैद्य या ओझा के पास? पर अगर बीमारी बड़ी हो तो? क्या तब अस्पताल जैसी कुछ जगहें थीं जहाँ वे अपना इलाज करा सकते

अस्पताल का पता...

तमिलनाडु की राजधानी चेन्नै के पास एक गाँव है – तिरुमुक्कूडल। यहाँ मिले एक बहुत पुराने शिलालेख से उस ज़माने में अस्पताल होने का सुराग मिलता है। यहाँ पर विष्णु का एक मन्दिर है जिसकी दीवारों पर कई शिलालेख खुदे हुए हैं। उनमें से एक शिलालेख में किसी "आतुलशाला" का उल्लेख है। क्या यह वास्तव में एक अस्पताल था, चलो पता करें।

तिरुमुक्कूडल के इस शिलालेख में चोल वंश के राजा वीरराजेन्द्र द्वारा सन् 1067 में जारी किया आदेश दर्ज है। यह एक काफी लम्बा शिलालेख है। उस समय मन्दिर के हिसाब-किताब को लेकर कुछ विवाद हो गया था। इसलिए राजा ने अपने अधिकारी को भेजकर पूछताछ करवाई। और फिर सारी बातें पता करके कुछ व्यवस्था बनाई।

मन्दिर के खर्चों के लिए एक गाँव की ज़मीन दान में मिली थी। साथ ही उस गाँव से जो भी लगान वसूल होता था वह भी इस मन्दिर को ही मिलता था। शिलालेख में इस आय पर होने वाले सभी खर्चों के बारे में लिखा है – पूजा-पाठ, मन्दिर के पुजारी व कर्मचारियों का वेतन, मन्दिर से जुड़े वेदपाठशाला के शिक्षकों व छात्रों का खर्च और सबसे महत्वपूर्ण मन्दिर से जुड़े हुए आतुलशाला का खर्च...। इन सबका पाई-पाई का हिसाब इस लेख में दिया गया है। इस लम्बे शिलालेख से आतुलशाला से सम्बन्धित हिस्से को पढ़ते हैं:

> "वीरचोलन नामक आतुलशाला के खर्च – 15 मरीज़ों के खर्चे के लिए लगभग दो कुरुणि धान; अश्वत्ताम भट्टन जो आरोग्यशाला में भर्ती मरीज़ों के लिए तथा इस मन्दिर से सम्बन्धित कर्मचारियों, शिक्षकों व छात्रों के लिए दवाइयाँ सुझाता है, को रोज़ तीन कुरुणि धान और 8 सिक्के; इसे पहले से ही इस काम के लिए कुछ ज़मीन पीढ़ी दर पीढ़ी उपयोग के लिए मिली हुई है; यहाँ शल्यचिकित्सा (ऑपरेशन) करने वाले के लिए रोज़ एक कुरुणि धान; दो लोग जो दवा के लिए जड़ी-बूटियाँ इकट्ठा करते हैं और जलाऊ लकड़ी लाते हैं उनमें से हरेक के लिए रोज़ एक कुरुणि धान और एक सिक्का; दो महिलाएँ जो बीमारों की सेवा करती हैं व उन्हें दवा देती हैं, के लिए प्रति व्यक्ति प्रति दिन आधा कुरुणि धान और आधा सिक्का; एक नाई जो मरीज़ों की सेवा करता है, उसे आधा कुरुणि धान.....
>
> विभिन्न तरह की जड़ी-बूटियाँ, तेल, चूर्ण, घी आदि के लिए 40 सिक्के....। (इन दवाओं की एक लम्बी सूची दी गई है।)
>
> इन सबकी व्यवस्था की गई थी।"

("कुरुणि" धान नापने का एक माप था। इसी तरह उस समय का सिक्का था "काशु"।)

कुछ रोचक बातें

इस शिलालेख को पढ़ने पर कई सवाल उठते हैं – आतुलशाला में होने वाले कौन-से काम आजकल के अस्पतालों में भी होते हैं?

हमारा ध्यान कुछ रोचक बातों पर भी जाता है – दवा बताने वाले वैद्य, दवा बनाने वाले कारीगर, ऑपरेशन करने वाले इन सबको मिलने वाले खर्च में कितना अन्तर दिखता है! वैद्य को ज़मीन तथा रोज़ तीन कुरुणि धान तथा 8 सिक्के जबकि ऑपरेशन करने वाले को सिर्फ एक कुरुणि धान! नाई को केवल आधा कुरुणि धान!

महिला सेविकाओं (नर्स) को पुरुष सेवकों की तुलना में आधा वेतन मिलता था। क्या आज भी महिलाओं व पुरुषों के वेतन में ऐसा अन्तर होता है?

अगर हम मान लें कि एक व्यक्ति पर हर रोज़ कम से कम एक कुरुणि का आठवाँ भाग खर्च होता था (जो हरेक मरीज़ के लिए रखा गया था) तो हम अनुमान लगा सकते हैं कि हरेक को वास्तव में कितना वेतन मिलता होगा। क्या तुम्हें यह अन्तर वाजिब लगता है? कारण सहित अपना उत्तर भेजना। साथ ही यह भी पता करना कि किसी अस्पताल में अलग-अलग लोगों को एक महीने में कितना वेतन मिलता होगा।

इस "अस्पताल" में कौन लोग इलाज कराने आते होंगे? कौन नहीं आ सके होंगे – क्या शिलालेख को पढ़कर तुम कुछ अन्दाज़ लगा सकते हो?

क्या तुम देख पा रहे हो कि अस्पताल में मरीज़ों के इलाज के साथ-साथ और भी बहुत कुछ होता था! पता करो, शायद आज भी ऐसा ही होता हो!

जंगल तो असली है पर हाथी और डायनासौर...

दोनों फोटोः महेश बसेड़िया